

97 - सूरह क़द्र^[1]

سُورَةُ الْقَدْرِ

सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं^[1]

- इस में कुर्आन के क़द्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। क़द्र का अर्थ है: आदर और सम्मान।

- इस में सब से पहले बताया गया है कि कुर्आन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषम (ताक़) रात में करो। (सहीह बुख़ारी: 2017, तथा सहीह मुस्लिम: 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुनः प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी: 37, तथा सहीह मुस्लिम: 759)

1 इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मदीनी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है।

इसी "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुख़ान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बकरः" में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में कुर्आन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात् इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुर्आन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो बह्यी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार कुर्आन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमज़ान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुर्आन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने उस (कुर्आन) को
"लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में
उतारा।
2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल
क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?
3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार
मास से उत्तम है।^[1]
4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के
लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील)
अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते
हैं।^[2]
5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने
तक रहती है।^[3]

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ

تَنْزِيلُ الْمَلَكِ وَالرُّوْحُ فِيهَا يَأْذِنُ رَبُّهُمْ مِنْ
كُلِّ أَمْرٍ

سَلَامٌ شَمِئَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ

1. हज़ार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है कि: इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (देखिये: सहीह बुख़ारी, हदीस नं॰ 35, तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं॰ 760)
2. "रूह" से अभिप्राय: जिबरील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वयं नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।
3. इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।